Date – 14 September 2022

भारत और G20

भारत बाली में होने वाले आगामी G20 राष्ट्राध्यक्षों और शासनाध्यक्षों के शिखर सम्मेलन में G20 की अध्यक्षता ग्रहण करेगा।

- भारत 1 दिसंबर, 2022 से 30 नवंबर, 2023 तक G20 की अध्यक्षता ग्रहण करेगा।
- G20 की इस अध्यक्षता के हिस्से के रूप में, भारत 2023 में मंत्रिस्तरीय बैठकों, कार्य समूहों, कार्यक्रमों और G20 राष्ट्राध्यक्षों के शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा।

भारत के G20 प्रेसीडेंसी का महत्व:

- G20 दुनिया के सबसे प्रभावशाली आर्थिक बहुपक्षीय मंचों में से एक है। यह देखते हुए कि इसके सदस्य विश्व के सकल घरेलू उत्पाद के 80% से अधिक और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के 75% का प्रतिनिधित्व करते हैं, G20 वैश्विक आर्थिक विकास और समृद्धि हासिल करने में महत्वपूर्ण महत्व रखता है, विशेष रूप से वैश्विक आर्थिक चुनौतियों जैसे कि मुद्रास्फीतिजनित मंदी के बीच।
- G20 की अध्यक्षता भारत को वैश्विक एजेंडा और प्रवचन को प्रस्तावित करने और स्थापित करने में केंद्र चरण ग्रहण करने का अवसर देगी। यह भारत को अन्य विकासशील और कम विकसित देशों के कारणों का समर्थन करते हुए वैश्विक एजेंडा पर अपनी प्राथमिकताओं और आख्यानों को रखने की अनुमति देगा। इसमें प्रौद्योगिकी हस्तांतरण, हरित अर्थव्यवस्था की ओर संक्रमण के लिए सहायता, विकासशील देशों के लिए व्यापार तक अधिक पहुंच, स्थायी सहायता और ऋण कार्यक्रमों की पेशकश करके देशों के ऋण संकट को संबोधित करना, कमजोर अर्थव्यवस्थाओं के लिए भोजन और

ऊर्जा की कीमतों / सुरक्षा से निपटने जैसे पहलू शामिल हो सकते हैं। आदि दूसरों के बीच में।

- 2023 में जी20 राष्ट्राध्यक्षों का शिखर सम्मेलन, यकीनन भारत द्वारा आयोजित अब तक का सबसे हाई-प्रोफाइल कार्यक्रम होगा। यह इस तरह के बड़े अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों के आयोजन में भारत के लिए उपयोगी राजनयिक दूरदर्शिता प्रदान करेगा।
- G20 एक अद्वितीय वैश्विक संस्था है, जहां विकसित और विकासशील देशों का प्रतिनिधित्व है। G20 की अध्यक्षता भारत को वैश्विक मंच पर अपने राजनीतिक, आर्थिक और बौद्धिक नेतृत्व का दावा करने की अनुमति देगी और इसलिए भारत को अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाने का अवसर प्रदान करेगी। वैश्विक महाशक्ति बनने की भारत की आकांक्षाओं को देखते हुए यह और भी महत्वपूर्ण है।

भारत के लिए चुनौतियां:

- विश्व व्यवस्था में एक उभरता हुआ विभाजन प्रतीत होता है जो अनिवार्य रूप से G20 में भी प्रकट होगा। उत्तर अटलांटिक संधि संगठन और G7 जैसे संगठनों सहित पश्चिम चीन और रूस के बीच उभरती गठजोड़ के विरोध में खड़ा है। भारत बीच में फंसा रहता है क्योंकि वह दोनों पक्षों से जुड़ने की कोशिश करता है।
- G20 विभिन्न मुद्दों पर गहराई से विभाजित है। मंच पर प्रस्तुत अक्सर विरोधी विचारों ने किसी भी पहलू पर आम सहमति-आधारित निर्णय पर पहुंचना बेहद मुश्किल बना दिया है।

भारत के लिए सिफारिशें:

- भारत को अपनी अध्यक्षता में G20 के लिए एक साझा आधार खोजने और एक व्यापक एजेंडा बनाने के लिए विरोधी सदस्य देशों के बीच एक नाजुक संतुलनकारी कार्य करना होगा। यह एजेंडा वैश्विक चिंता के मुद्दों को संबोधित करने में सक्षम होना चाहिए।
- भारत के G20 प्रेसीडेंसी के दौरान स्वास्थ्य, सतत ऊर्जा और डिजिटल परिवर्तन जैसे क्षेत्रों को शीर्ष फोकस क्षेत्र बने रहना चाहिए। आर्थिक सुधार, मजबूत व्यापार और निवेश प्रवाह, आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन सुनिश्चित करने और रोजगार के अवसर सुनिश्चित करने जैसे इन पहलुओं के अलावा भी ध्यान देना चाहिए। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए सतत और समावेशी विकास सुनिश्चित करेगा।
- भारत को अपने G20 प्रेसीडेंसी द्वारा प्रदान किए गए अवसर का उपयोग यूरोपीय संघ, यूके और कनाडा जैसे G20 सदस्यों के साथ अधिक सहयोग करने के लिए करना चाहिए ताकि उनके साथ मुक्त व्यापार समझौतों को साकार करने में समन्वय में तेजी लाई जा सके।

- भारत को अपनी जी20 अध्यक्षता द्वारा प्रदान किए गए अवसर का उपयोग अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के देशों के साथ अधिक से अधिक जुड़ाव बनाने के लिए करना चाहिए। भारत को G20 में इन देशों के लिए बेहतर और अधिक संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने का प्रयास करना चाहिए।

अतिरिक्त जानकारी:

- उज्बेकिस्तान के समरकंद में एससीओ के राष्ट्राध्यक्षों की परिषद की आगामी बैठक के अंत में भारत शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ) की घूर्णी अध्यक्षता ग्रहण करेगा। भारत सितंबर 2023 तक एक साल के लिए राष्ट्रपति पद पर रहेगा और इसकी अध्यक्षता के हिस्से के रूप में, यह 2023 में एससीओ शिखर सम्मेलन की मेजबानी करेगा।
- भारत दिसंबर 2022 के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के अध्यक्ष के रूप में अध्यक्षता करेगा।

- **G20 की अध्यक्षता के लिए भारत की धारणा भारत को अपनी प्राथमिकताओं और आख्यानों के अनुरूप वैश्विक एजेंडा और प्रवचन को प्रस्तावित करने और स्थापित करने के साथ-साथ अपने राजनीतिक, आर्थिक और बौद्धिक नेतृत्व पर जोर देने के लिए वैश्विक मंच पर एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान करती है।**

G20 क्या है?

- G20 अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक के प्रतिनिधियों के साथ 19 देशों और यूरोपीय संघ का एक अनौपचारिक समूह है।
- G20 सदस्यता में दुनिया की सबसे बड़ी उन्नत और उभरती अर्थव्यवस्थाओं का मिश्रण शामिल है, साथ में, G20 सदस्य विश्व जीडीपी के 80% से अधिक, अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के 75% और विश्व की 60% आबादी का प्रतिनिधित्व करते हैं।

G20 अस्तित्व में कैसे आया?

- **1997-1999 एशियाई वित्तीय संकट:** यह एक मंत्रिस्तरीय मंच था जो G7 द्वारा विकसित और विकासशील दोनों अर्थव्यवस्थाओं को आमंत्रित करने के बाद उभरा। 1999 में वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों की बैठक शुरू हुई।
- 2008 के वित्तीय संकट के बीच दुनिया ने उच्चतम राजनीतिक स्तर पर एक नई आम सहमति बनाने की आवश्यकता को देखा। यह निर्णय लिया गया कि G20 नेताओं की सालाना एक बार बैठक शुरू होगी।
- इन शिखर सम्मेलनों को तैयार करने में मदद करने के लिए, G20 के वित्त मंत्री और केंद्रीय बैंक के गवर्नर साल में दो बार अपने आप मिलते रहते हैं। वे एक ही समय में अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व बैंक के रूप में मिलते हैं।

रवि सिंह

भारत और Indo Pacific Economic Framework (IPEF)

संदर्भ- इण्डियन एक्सप्रैस के अनुसार भारत को सक्रिय व्यापार को आगे बढ़ाने के लिए द्विपक्षीय व्यापार के साथ बहुपक्षीय समझौतों को भी महत्व देना चाहिए। भारत और व्यापार समझौते- भारत सरकार ने 2019 में क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी (RCEP) के बाहर जाने का मार्ग चुना। क्योंकि भारत अनुचित प्रतिस्पर्धा से बचना चाहता था। ऑस्ट्रिया व संयुक्त अरब अमीरात के साथ दो संयुक्त व्यापार समझौते किए हैं- भारत ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (IND-AUS ECTA) संयुक्त अरब अमीरात के साथ एक FTA यूके, कनाडा, यूरोपीय संघ के साथ भी FTA पर कार्य कर रहा है।

लाभ- इन समझौतों से भारत के उद्योगों को भायदा होगा जैसे- गहने, कीमती पत्थर ,चमड़ा, कपड़ा, खाना, कृषि उत्पाद, इंजीनियरिंग उत्पाद, चिकित्सा उपकरण आदि। IPEF से भारत ने अभी के लिए बाहर निकलने का मार्ग चुना है।

IPEF- 23 मई 2022 को अमेरिका क राष्ट्रपति जो बाइडन ने प्रारंभ किया।

इसमें 14 सदस्य देश शामिल थे।

1. ऑस्ट्रेलिया
2. ब्रुनेई
3. फिजी
4. इंडोनेशिया
5. जापान
6. मलेशिया
7. न्यूजीलैण्ड
8. फिलीपींस
9. सिंगापुर
10. दक्षिण कोरिया
11. थाइलैण्ड
12. संयुक्त राज्य अमेरिका
13. वियतनाम और
14. भारत जो हाल ही में IPEF से हट चुका है।

इसके 4 स्तंभ हैं-

निष्पक्ष व लचीला व्यापार
आपूर्ति श्रृंखला लचीलापन
स्वच्छ ऊर्जा, डिकार्बोनाइजेशन कर और भ्रष्टाचार विरोधी IPEF में डिजिटल गवर्नेंस के कुछ बिंदु भारत सरकार की नीतियों के पक्ष में नहीं है। डाटा लोकलाइजोशन व क्रॉस बॉर्डर डेटा फ्लो पर भारत और अमेरिकी कंपनियों के साथ विवाद होता रहा है। ऐसे कुछ मुद्दों के कारण भारत ने IPEF से हटने का भैसला किया है।

IPEF से बाहर होने के समय चुनौतियाँ-

अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष के पूर्वानुमान के अनुसार वैश्विक विकास दर 3.6% से घटकर 3.2% हो गया है। साथ ही वैश्विक व्यापार के पूर्वानुमान के अनुसार वस्तुओं और सेवाओं का विश्व व्यापार भी 4.1% तक कम हो गया है।
भारत की निर्यात वृद्धि जुलाई में 2.1% रह गई जबकि अगस्त 2022 में यह 1.2% कम हो गई।

भारत को गोपनीयता और डेटा के संबंध में डिजिटल ढांचे को मजबूत करने की आवश्यकता है।

गुंजन जोशी